श्री लक्ष्मीनाथ

दिव्य-दर्शन

शंख चक्र शोभित गदा, लिये कर कमल विशाल।
वाम रमा वाहन गरुड़, प्रगटे दीनदयाल।।

भगवान श्री लक्ष्मीनाथ दिव्य-दर्शन

प्रकाशक–

श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर धर्मार्थ ट्रस्ट

फतेहपुर–शेखावाटी (राजस्थान)

प्रथम आवृत्ति–
वशहरा २०५३

मूल्य–
तीस रुपये

प्रकाशक—
श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर धर्मार्थ ट्रस्ट
फतेहपुर-शेखावाटी (राजस्थान)

प्रथम संस्करण—
दशहरा संवत् २०५३,

सम्पादन—
विष्णुप्रसाद खेड़वाल
अवैतनिक सचिव
श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर प्रबन्ध समिति
फतेहपुर-शेखावाटी (राजस्थान)

मूल्य—तीस रुपये

मुद्रक—
लक्ष्मीनाथ प्रेस
फतेहपुर-शेखावाटी (राज०)

श्रीगणेशाय नमः

प्राक्कथन

"श्री बद्रीनाथ धाम स्वरूप ही हैं, फतेहपुर के प्रभु श्रीलक्ष्मीनाथ"। ये शब्द हैं पूज्यस्वामी श्री करपात्रीजी महाराज के। जब आप फतेहपुर में सम्पन्न (संवत् २०३० में) एक महायज्ञ में पधारे थे। आप श्री देवकीनन्दन खेडवाल के अनुरोध पर मन्दिर में आये। सभामण्ड के सामने भगवान को निहार रहे थे, तभी दिव्य दर्शन की अनुभूति के साथ उन्होंने उक्त उद्‌गार प्रकट किये।

उक्त सारगर्भित वाणी का जरूर महत्व है। एक सामञ्जस्य तो जरूर देखने में आता है कि श्री बद्रीनाथधाम के पट खुलने पर वह आरती दीपक बती से चालू होती है एवं प्रायः उसी काल में यहां आरती चन्दन-तुलसी से। जब वहाँ पट्ट बन्द हो जाते हैं, तब यहां दीपक बत्ती की आरती प्रारम्भ हो जाती है। इस मन्दिर की यही परम्परा है।

आरती जरूर दीपक-बत्ती की बारहों मास होती है, चाहे श्री बद्रीनाथ धाम में हो या फतेहपुर श्री लक्ष्मीनाथ धाम में। शायद यही आभास पूज्य स्वामीजी को हुआ हो, अतः उक्त उद्‌गार उनके श्री मुख से निकले हों।

भक्तों के भगवान कब कहाँ अवतरित होते हैं यह तो जन जन में व्याप्त उन चमत्कारी घटनाओं से साक्ष्य होने पर ही होता है।

सवा पांच सौ साल पूर्व जहाँ भगवान का उद्भव हुआ था। उस समय से आज तक भगवान ने न मालूम किस भक्त के लिए, किस रूप में, क्या किया ?

परन्तु कुछ बातें पीढ़ी दर पीढ़ी स्मरणीय बनी रहती हैं और वही स्मरणीय शृंखला वर्तमान गाथा का आधार होता है।

समय के साथ साथ भगवान श्री लक्ष्मीनाथ के वरद हस्त का प्रभाव फतेहपुर एवं आस-पास के क्षेत्र में प्रकाशमान होता गया। जन मानस का कवि हृदय भगवान के गुण-गान में अपनी वाणी से भक्ति भाव से ओत-प्रोत रचनाऐं रचित करता रहा।

उन्हीं सब कृतियों-रचनाओं का संग्रह इस पुस्तक में समावेश करने का प्रयत्न किया गया है।

मन्दिर के इतिहास सम्बन्धी पुस्तक सर्व प्रथम पं० देवकीनन्दन खेडवाल द्वारा प्रकाशित की गई थी। प्रारम्भ से वर्तमान तक ५२५ वर्ष के उपलब्ध इतिहास की सम्पूर्ण गाथा का वर्णन इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में देने का प्रयत्न किया गया है।

भगवान की आरती की समय सारिणी भक्त समुदाय के उपयोगार्थ प्रकाशित की जारही है।

मन्दिर में सबसे बडे महोत्सव के रूप में श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन जो ९० वर्षों से लगातार चल रहा है, अभी तक का क्रमबार ब्योरा इस पुस्तक में प्रथम खण्ड में ही प्रकाशित किया जा रहा है।

व्यवस्था में पदारूढ व्यक्तियों के ज्ञानचक्षुओं को खोलकर भगवान् के आंचल में सर्वोपरि दर्शन लाभ प्राप्त करने वाले उस भक्त भीखजन द्वारा रचित ज्ञान एवं भक्ति से परिपूर्ण पुस्तक भीख बावनी को भी द्वितीय खण्ड मे प्रकाशित किया जारहा है।

भगवान् के सामने नित्य प्रति-दिन उत्सव-महोत्सवों पर गाये जाने वाले भोग-आरती, बधाई-पोढना आदि की उपलब्ध सामग्री भी

पुस्तक के द्वितीय-खण्ड में प्रकाशित की जा रही है। इसके संकलन का समस्त भार श्री प्रहलादराय चमड़िया के पयत्नों से साकार हुआ है। मन्दिर प्रबन्ध समिति इस कार्य के लिए उनका आभार व्यक्त करती है।

बारह मासों के व्रत-त्योंहार आदि के विषय की अनेक पुस्तकें जैसे–बारह मास के त्योंहार, गीत, व्रत परिचय आदि प्रकाशित हो चुकी हैं। फिर भी मन्दिर अपनी परम्परा के अनुसार शास्त्रों की बताई विधि को मानते हुए लोकाचार में प्रचलित मान्यताओं को आधार मानकर मुख्य मुख्य विन्दुओं पर जन उपयोगी सामग्री इस पुस्तक के तृतीय खण्ड में प्रकाशित की जारही है।

पुस्तक को साकार रूप देने में आदरणीय श्री रामस्वरूप बियाला का सराहनीय सहयोग रहा है। इसके लिए प्रबन्ध समिति उनकी आभारी है।

मन्दिर की उच्च प्रतिष्ठा को कायम रखते हुए भगवान् के प्रति आस्था का फैलाव फतेहपुर एवं फतेहपुर के बाहर उन भक्त जनों एवं पुजारी समुदायों का रहा है, जिन्होंने हर समय मन्दिर ट्रस्ट एवं स्थानीय प्रबन्ध समिति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया है। ट्रस्ट एवं स्थानीय प्रबन्ध समिति उन सभी की आभारी है।

फतेहपुर नगर के निवासियों के साथ वे सभी भक्त समुदाय भी साधुवाद के पात्र हैं, जो श्रीलक्ष्मीनाथ भगवान के प्रति आस्था एवं श्रद्धा के केन्द्र में रहकर, हर कार्य में सहयोगी रहे हैं।

अतः हम सभी के अत्यन्त आभारी हैं। त्रुटियों के लिए क्षमा के साथ।

विष्णुप्रसाद खेड़वाल
अवैतनिक-सचिव
श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर प्रबन्ध समिति

अनुक्रमणिका

प्रथमखण्ड—

क्र. सं.	विषय	पृ० सं०
१.	फतेहपुर की ऐतिहासिक एवं धार्मिक पृष्ठ भूमि	१०
२.	भगवान् श्री लक्ष्मीनाथजी कीमूर्ति का उद्भव	११
३.	गौरूजी भोजक की हैदरावाद यात्रा	१२
४.	भैरूंजी की मूर्ति स्थापन-ग्राम माण्डेला	१४
५.	श्री लक्ष्मीनाथजी का फतेहपुर में प्रादुर्भाव	१५
६.	मन्दिर की पंचों द्वारा व्यवस्था	१६
७.	भक्त भीखजन	१८
८.	मन्दिर का नवनिर्माण एवं क्रमिक विकास	१९
९.	पूजा पद्धति उत्सव एवं महोत्सव	२०
१०.	श्रीमद् भागवत कथा के आयोजक	२४
११.	आलोकिक प्रत्यक्ष चमत्कारिक अनुभव	२८
१२.	संक्षिप्त तिथि तालिका परिचय	३१
१३.	प्रतिदिन आरती समय सारिणी	३२

द्वितीय खण्ड—

क्र, सं.	विषय	पृ० सं०
१.	भोग प्रातः काल	३५
२.	प्रातः आरती	३६
३.	भोग मध्याह्न	३८
४.	आरती सायंकाल	३९
५.	आरती शंकरजी	४०
६.	भोग रात्री का	४४
७.	पोढणा	४७
८.	प्रार्थना श्री लक्ष्मीनाथजी	५४
९	भजन बालाजी	५७
१०.	लावनी	५८
११.	बधाई श्रीरामचन्द्रजी	६२
१२.	बधाई श्री कृष्णजी	६९
१३.	स्तुती श्री लक्ष्मीनाथजी	८३
१४.	भीख बावनी	८७

तृतीय खण्ड–

क्र.सं.	विषय	पृ० सं०
१.	संवत्सर, संक्रान्ति	१०१
२.	अधिकमास एवं क्षयमास	१०२
३.	गुरु, शुक्र, अस्त और ग्रहण	१०३
४.	भद्रा और व्रत	१०४
५.	वैष्णव और स्मार्त	१०५
६.	चैत्र मास	१०६
७.	वैशाख मास	१०८
८.	ज्येष्ठ मास	१०९
९.	आषाढ मास व श्रावण मास	११०
१०.	भाद्रपद मास	११२
११.	आश्विन मास श्राद्धपक्ष	११४
१२.	शारदीय नवरात्र	११९
१३.	विजयादशमी	१२२
१४.	कार्तिक मास दीपोत्सव	१२३
१५.	देवउत्थापन एवं तुलसी विवाह	१२५
१६.	मार्गशीर्ष-पौष एवं माघ मास	१२६
१७.	फाल्गुन मास महा-शिवरात्री	१२७
१८.	होलिका	१२७
१९.	गणगौरी पूजन	१२८

प्रथम खण्ड

★

श्री लक्ष्मीनाथजी महाराज का मन्दिर

उद्भव, प्रादुर्भाव, विकास एवं व्यवस्था

भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

उद्यदादित्य सङ्काशं पीतवाससमच्युतम् ।
शंख चक्र गदा पाणिं ध्याये लक्ष्मीपतिं हरिम् ॥

प्राचीनकाल में यह शेखावाटी प्रदेश विश्व का एक पवित्र धार्मिक स्थल था। उस समय की व्यवस्था के अनुसार यह प्रदेश आर्यावर्त में ब्रह्मावर्त के नाम से प्रसिद्ध था जिसके निकट दो देव नदियाँ बहा करती थी जिनका नाम सरस्वती और दृशद्वती था। इनके तट पर अनेक तीर्थ थे। उन तीर्थों में वेदों के मन्त्र-दृष्टा, ऋषि महर्षि रहा करते थे। विश्व में फैले आर्य लोगों की यह जन्म भूमि है।

सरस्वती और दृशद्वती की धारा बन्द हो जाने पर किनारों पर स्थित नगरों व धार्मिक स्थलों का विकास रुक गया, रह गये मात्र वन वाटिका बाग। मुस्लिम काल में इस क्षेत्र का नाम बाग (राजस्थानी भाषा में ड़ जुड़ जाने) से बागड़ हो गया। जैसे मेवाड़ ढुंढ़ाड़, मारवाड़ आदि। संवत् १५०८ से बागड़ देश का नाम फतेहपुर वाटी और झुन्झुनूवाटी हुआ। संवत् १७८८ के आरम्भ से फतेहपुरवाटी और झुन्झुनूवाटी पर शेखावतों का राज्य होने से इस क्षेत्र को शेखावाटी कहा जाने लगा। वर्तमान में भी सीकर और झुन्झुनू दो जनपदों में यह क्षेत्र विभाजित है।

फतेहपुर–एतिहासिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि

संवत् १४४० के लगभग दिल्ली के बादशाह ने कर्मचन्द का (मुस्लिम धर्म परिवर्तन के बाद नाम कायम खाँ) (शेखावाटी के कायमखानी इसी की संताने हैं) को हिसार का शासक नियुक्त किया , इन्हीं का पौत्र फतेह खाँ (ज्येष्ठ पुत्र ताज खाँ) संवत् १५०२ में हिसार की गद्दी पर बैठा। बार बार आक्रमणों से परेशान फतेहखाँ ने अपने चाचा मोहम्मद खाँ के साथ संवत् १५०५ माघ सुदी ५ को बागड़ देश में अपने नाम से नया शहर बसाया। संवत् १५०८ चैत्र सुदी ५ को नवाब फतेह खाँ ने अपने दल सहित बसाये गये इस नगर फतेहपुर के किले में प्रवेश किया। आपने बहुत लोगों को हिसार की ओर से अपने साथ लाकर शहर के चारों ओर बसाया। इसमें प्रमुख श्री खेमराज जी चौधरी, तुहिनमल जी सरावगी, भोपतराम जी पुरोहित, ईश्वरीदास जी भोजक बस्तीराम जी खेड़वाल और अनेक ओसवाल, अग्रवाल आदि सभी जातियों के लोग थे।

समाज सेवी कर्तव्य परायण महाजनों सेठ साहुकारों एवं धर्मनिष्ठ विद्वानों, प्रतिभाशाली ब्राह्मणों, साधु सन्तों, महात्माओं की इस नगरी में पूर्व की तरफ संवत् १५२४ में बने महात्मा गंगानाथ जी की जीवित समाधि पर शिवालय एवं संवत् १५४९ में उनके शिष्य सेवानाथ जी पर छत्री नवाब दौलत खाँ द्वारा बनाई गयी। इसी प्रांगण पर संवत् १८५० के लगभग तपस्वी सन्त सारनाथ जी द्वारा एक मन्दिर का निर्माण करवाया गया। वर्तमान में इसी मन्दिर की सुन्दर एवं विशाल रचना वचन सिद्ध महात्मा श्री १०८ श्री रतिनाथ जी महाराज के संरक्षण में की गई जो वर्तमान में यहां एवं श्री बऊधाम की गद्दी पर विराजमान है।

नगर के दक्षिण में बने संवत् १८६२ फाल्गुन बदी १३ को सन्त बुद्धगिरि जी महाराज की जीवित समाधि पर राव राजा लक्ष्मणसिंह जी द्वारा एक शिवालय बनाया गया। श्री बुद्धगिरि जी महाराज की इष्टदेवी हिंगलाज ने आपके तप के प्रभाव से प्रसन्न होकर दर्शन दिये। शिवालय के पास उनका मन्दिर आज भी स्थित है। शहर के उत्तर में उच्च तपस्वी व ज्ञानी महात्मा श्री अमृतनाथ जी का आश्रम स्थित है। आपका जन्म संवत् १९०९ में बऊग्राम झुन्झूनू में हुआ था। फतेहपुर स्थित आपकी समाधि पर बने भव्य आश्रम पर

सरल हृदय पूज्य सन्त श्री नरहरिनाथ जी महाराज वर्तमान में गद्दी पर विराजमान हैं।

फतेहपुर शहर के पश्चिम दिशा में बने सुन्दर भव्य मन्दिर में विराजते हैं साक्षात भगवान् श्री लक्ष्मीनाथ जी महाराज।

भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी की मूर्ति का उद्भव :–

नगर की तीनों दिशाओं के संतों के (गंगानाथ, अमृतनाथ, बुद्धगिरि जी) आराध्य देव भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी की मूर्ति का आगमन फतेहपुर के नवाब के साथ हिसार से आये श्री ईश्वरीदास जी भोजक की चौथी पीढ़ी में गोरूजी भोजक से हुआ। एक प्राचीन हस्तलिखित पत्र श्री बालुरामजी भोजक के पास में है एवं छाजुरामजी भोजक की लिखी जैन धर्म की पुस्तक " दश लाक्षणिक पूजा " है। उसके अन्त में भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी के फतेहपुर आगमन के विषय में भी लिखा हुआ है। श्री देवकीनन्दन खेड़वाल ने अपनी पुस्तक में उक्त दोनों पत्रों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, लिखा है। उन्हीं की पत्रावली को आधार मान कर दक्षिण में हैदराबाद नगर के पास अलेर गाँव में उन ऐतिहासिक तथ्यों को टटोलने श्रीविष्णुप्रसाद खेड़वाल दिनांक ११-१२-१९९३ को स्वयं वहां गये। ईसवी सन् १४७२ से १५३१ के आस पास के पूरे हैदराबाद क्षेत्र के इतिहास को जाना, ७० किलोमीटर दूर आलेर नामक ग्राम में भ्रमण किया वहां स्थित कब्रिस्तान के प्रमुख शिला पट्टों का अध्ययन करवाया गया। ऐतिहासिक किताबों से जानकारी वहां के बुजुर्गों के माध्यम से ली। सभी तथ्यों का निचोड़ रहा कि यह हैदराबाद नहीं है जो अपने भगवान का था। न ही उस समय का शासक कोई अल्ली खाँ पठान था और न ही उनका पुत्र मोहम्मद अली उस समय किसी प्रधान पद पर आसीन या सान्य पृष्ठ-भूमि पर आधारित इतिहास के पन्नों में कहीं उसका उल्लेख रहा हो। इस दक्षिण हैदराबाद के विषय में पुराने पत्रों द्वारा उल्लिखित यह भी उल्लेख सामने रखना जरूरी है कि सन् १९९० में ही हैदराबाद अपना चार शताब्दियों का उत्सव मना रहा था। इसके पहले यह शहर गोलकोण्डा राज्य में भाग्यनगर के नाम से जाना जाता था व वस्तुतः इसे कुतुबशाही राजवंश के ५वां राजा मोहम्मद कुली कुतुबशाह ने सन् १५९० ई० में गोलकोंडा राज्य में बनवाया था।

अगर भगवान की मूर्ति का प्रादुर्भाव संवत् १५२९ (सन् १४७२) में इसी हैदराबाद में हुआ होता तो उन पत्रावलियों में इसका नाम गोलकुण्डा या भाग्यनगर लिखा गया होता। दूसरा गोरूजी भोजक द्वारा संवत् १५८८ सन्

१५३१ में इसी हैदराबाद से आगमन होता तो फतेहपुर प्रवेश दक्षिण दिशा की ओर बुद्धगिरि जी की तरफ से होता, न कि पश्चिम की ओर मान्डेला ग्राम से। उक्त सभी बातों पर ध्यान दिया जाये तो माना जायेगा कि सम्भव है भगवान का प्रादुर्भाव पश्चिम में सिन्ध हैदराबाद में है। जो इस समय पाकिस्तान में है हुआ हो, यह एक खोज का विषय है।

अपने इस ज्ञान के परे जो भी तथ्य छुपे हो वर्तमान में मिले संकेतों को ही आधार मानकर उक्त पत्रावली में उल्लिखित ऐतिहासिक वर्णन यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

पं. देवकीनन्दन खेड़वाल द्वारा रचित पुस्तक के से उद्धृत

गोरुजी भोजक की हैदराबाद यात्रा

गोरुजी भोजक अपने किसी कार्य से दक्षिण की यात्रा में हैदराबाद से तीन कोस दक्षिण में स्थित अलोर नामक गांव में गए हुए थे। अलोर गांव के सरदार पठान का नाम अली खाँ और पुत्र का नाम मुहम्मदअली था। इस गांव में गोरुजी को रहते हुये लगभग एक सप्ताह होने को था तब एक दिन गोरुजी जिस घर के आगे अर्द्धनिद्रा अवस्था में सोये हुये हुए थे उस घर के आगे से अर्द्धरात्रि में एक बालक जटाधारी पांवों में पैंजनी लाल लंगोट बांधे कन्धे पर जल का भरा हुवा कलशा लेकर आता हुआ दिखाई दिया। इस बालक के मनुष्यों से भिन्न लक्षण (शरीर की छाया और पांवों के चिह्न पृथ्वी पर न पड़ना) देखकर गोरुजी ने अपने मन में विचार किया कि यह मनुष्य न होकर कोई देवता है। गोरुजी उसी समय उठे हाथ पांव धोये और रास्ते में खड़े होकर हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि हे महाराज! आप इस बालक अवस्था में अर्द्धरात्रि के समय अकेले जल भरते हैं इसका क्या कारण है? मुझ पर कृपा करके यदि उचित समझें तो सारी बातें कहिए। तब भैरूंजी ने कहा "तुमको इससे क्या प्रयोजन है?" गोरुजी ने कहा," मैं दो रोटियों की इच्छा करके यहाँ पर आया था किन्तु आपका दर्शन होने से मेरे सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध हो गये।" भैरूजी ने कहा' यहां पर एक सदाराम नामक हिन्दू छीपा सोमानी जाति का भक्त नामदेवजी के वंश का रहता है। (स्मरण रहे भक्त नामदेवजी का जन्म संवत् १३२७ में दामा सेठ दर्जी (छींपा) के यहां हुआ था व हमारे फतेहपुर में अब भी इस वंश के बहुत से घर छींपा दर्जियों के हैं।) उसकी अवस्था ६० वर्ष की हो गई है व उसको कोई सन्तान नहीं है। मैंने उसको वचन दिया है कि उसके घर में जितना भी जल और इन्धन लगेगा उतना मैं लाकर दूंगा।

आज से नो महिने व्यतीत होने के पश्चात् उसके एक पुत्र होगा यह तुम सदाराम छींपे के पास जाकर कह दो। तुम्हारी बात सिद्ध होगी। छींपा सदाराम तुम्हारा मान करेगा। तुम्हारी इच्छनुसार धन तुमको देगा।" गोरुजी ने कहा "मुझे आप स्वयं मिल गये। अब द्रव्य की याचना नहीं करके आपको ही लेने की याचना करूंगा। भैरूंजी ने कहा–, "नहीं मुझे नहीं, मांग कर अन्य वस्तु अपनी इच्छानुसार मांग लेना" गोरुजी ने कहा "नहीं महाराज मैं तो आपकी ही मांग करूंगा।" इतना सुन भैरूजी चले गये।

प्रातः काल गोरुजी छींपा के घर गये सदाराम ने दण्डवत प्रणाम की। कुशल प्रश्न होने के बाद गौरुजी ने कहा कि आज से ठीक ९ महीने के बाद तुम्हारे एक पुत्र होगा। छींपा ने कहा यदि मेरे पुत्र होगा तो आपके चरणों का पूजन करूंगा। मेरे घर में होने वाली जो भी वस्तु आप मांगोगे, मैं आपको दूंगा।

नौ महिने बीतने के पश्चात् सदाराम के पुत्र हुआ। पुत्र जब एक महीने का हो गया तब गोरुजी पुनः सदाराम के पास गये। सदाराम ने गोरुजी का सम्मान किया और कहा आपकी जो भी इच्छा हो मांगो। गोरुजी ने कहा "पहले वचन दीजिये तब माँगूगा। इस पर सदाराम और उसकी स्त्री दोनों ने प्रसन्न होकर वचन दिया तब गोरुजी ने कहा, "आपके पास में भैरूजी हैं उनको मुझे दे दीजिये। छींपा ने कहा आपने यह क्या मांग लिया? अन्य जो भी इच्छा हो मांगो।" तब गोरुजी ने कहा मुझे और कुछ नहीं चाहिए या तो आप भैरूजी को दीजिये या अपने वचन से मुकर जाइये।" तब सदाराम ने मय अपनी स्त्री के हाथ जोड़ कर भैरूंजी से प्रार्थना की, कि हे महाराज! अब आप गोरूजी के साथ जाइये।

इस प्रकार कहने पर गोरूजी अपने रहने के स्थान पर आ गये। सायंकाल भैरूंजी ने गोरूजी के पास आकर कहा, तुमने जो कहा था वही किया अर्थात् मुझे ही मांग लाये।" गोरूजी ने कहा, "मुझे तो आप मिल गये अतः सब कुछ मिल गया। भैरूजी ने प्रसन्न होकर कहा "इस गांव के पठान के लड़के मुहम्मद अली के पास में श्री लक्ष्मीनाथजी की एक प्रतिमा बड़ी विशाल, प्रत्यक्ष और प्राचीन है, उस प्रतिमा को भी मैं तुमको दिला दूंगा।

गोरूजी ने कहा, "पठान जाति का मुसलमान है उसके पास में यह मूर्ति किस प्रकार आई?" भैरूजी ने कहा पठान का लड़का मुहम्मद अली संवत्

१५२६ (सन् १४७२) में शिकार खेलने वन में गया था। बहुत दूर जाने पर उसको रात हो गई। एक वृक्ष के नीचे उसने अपना डेरा लगाया। थकावट के कारण उसको जल्द ही नींद आ गई। प्रातः काल उसकी आँख खुली तो अपने को जमीन पर उल्टा पड़ा पाया। यह देखकर मुहम्मद अली को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपने मन में विचारा कि संभव है इस जमीन के नीचे कुछ हो। उस भूमि को साफ किया तो वह भूमि फटकर उसमें से एक सफेद पाषाण की बड़ी विशाल चतुर्भुजी मूर्ति निकली। मुहम्मद अली उस मूर्ति को अपने साथ ले आया।

इतना सुनकर गोरूजी ने कहा, "वह मूर्त्ति मुझे किस प्रकार मिलेगी", तब भैरूजी ने कहा, 'तुम पठान के पास जाकर उस मूर्ति को मांगो। मैं उसके हृदय में तुम्हारे प्रति अच्छी भावना उत्पन्न कर उस मूर्ति को तुमको दिला दूंगा। मूर्ति को लेकर तुम फतेहपुर चले जाना। मैं अपने आप तुम्हारे साथ आ जाऊंगा लेकिन मेरे विषय में किसी प्रकार की शंका मत करना। यदि सन्देह किया तो मैं उसी स्थान पर ठहर जाऊंगा।

दूसरे दिन प्रातः काल गोरूजी मुहम्मद अली के पास गये व उनसे श्री लक्ष्मीनाथजी की मूर्ति की याचना की। पठान के पुत्र मुहम्मद अली ने उसी समय भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी की मूर्ति गोरूजी को देदी। मूर्ति लेकर गोरूजी फतेहपुर के लिए चल पड़े।

कई दिनों के पश्चात् फतेहपुर के निकट पहुंचे। फतेहपुर केवल दो कोस मात्र रह गया तब गोरूजी ने एक ऊंचे बालू रेत के टीले पर ठहर कर विश्राम किया मन में विचार किया कि भैरूजी तो नहीं आये। उसी समय भैरूंजी भूमि पर उतरे और गोरूजी से कहा कि तुमने मेरे पर सन्देह किया है। अतः अब मैं यहीं ठहरूंगा। गोरूजी भोजक ने श्री भैरूजी की प्रतिमा स्वरुप को वहीं स्थापित किया।

भैरूंजी की मूर्ति स्थापन – ग्राम माण्डेला में

फतेहपुर के पश्चिम में स्थित ग्राम मांडेला (बडा) में स्थापित भैरूजी मन्दिर के निकट ही माण्डेला नामक एक गांव बसा हुआ है। भैरूंजी के मण्ड के कारण इस गांव का नाम माण्डेला है यहां के भैरूंजी प्रसिद्ध हैं। श्री चोथमलजी केडिया ने ऊंचे टीले पर भैरूंजी का एक मन्दिर बनवा दिया

मन्दिर के नीचे सीढ़ियों के पास में ही एक छोटा सा मण्ड है। उसी मण्ड में गोरूजी की लाई हुई भैरूजी की प्राचीन प्रतिमा विद्यमान है। उसके पास में ही श्री नागरमल जी गोयनका ने एक कुआ बनवा दिया। अब एक पाठशाला भी बन गई है। फतेहपुर के ब्राह्मण और वैश्यों के यहां विवाह में हल्दहाथ के पहले माण्डेले के भैरूजी की जात देनी आवश्यक होती है। पुत्र जन्म और विवाह के पश्चात् भी कुछ लोगों के यहां भैरूंजी की जात दी जाती है।

श्री लक्ष्मीनाथजी का फतेहपुर में प्रादुर्भाव

संवत् १५८८ (सन् १५३१) ज्येष्ठ बदी २ को श्री लक्ष्मीनाथ जी को लेकर गोरूजी भोजक फतेहपुर आये। फतेहपुर में उस समय श्री सीताराम जी का मन्दिर हिन्दू रानियों के दर्शनार्थ किले के सामने (वर्तमान में सब्जी मण्डी के पीछे है) नवाब दौलत खाँ के समय में लगभग संवत् १५६० में बनाया गया था। इसमें किले के भीतर से आई एक सुरंग आज भी देखी जा सकती है। सुरंग के पास ही एक तिबारे में बने कमरे की एक चौखट पर संवत् १५७६ फागण सुदी शाके १४४३ खुदा हुआ है जो पुराने समय का होना प्रदर्शित करता है। सर्वप्रथम इसी मन्दिर के नजदीक बनी एक कुटिया में भगवान को विराजमान किया गया।

फतेहपुर के तत्कालीन पंच चौधरी जाति के अग्रवाल महाजन थे। गोरूजी ने उनसे एक मन्दिर बनवाने के लिये कहा। चौधरियों ने स्वयं आगे होकर शहर के मुख्य २ व्यक्तियों को बुलाकर सर्वसम्मति से फतेहपुर के बाजार में एक मन्दिर बनवाने का निश्चय किया। जमीन एक अग्रवाल महाजन भूरियों की बाजार में पड़ी थी। उन्होंने सहर्ष मन्दिर के लिये प्रदान करदी। मन्दिर के चेजे के लिये सभी दुकानदारों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार एक आना, आधा आना और पाव आना चन्दे में लिखा और मन्दिर के निर्माण कार्य में एक तिबारा और एक सभामण्ड बनकर तैयार हुआ तब तक ऊपर लिखा चन्दा प्रति दिन देते रहे।

संवत् १६२१ की बैसाख सुदि १५ (पूर्णिमा) के दिन भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी महाराज की उक्त प्रतिमा को श्री सीताराम जी मन्दिर की कुटिया से लाकर इस नवनिर्मित मन्दिर में विराजमान किया गया।

मन्दिर की पंचों द्वारा व्यवस्था

मन्दिर के पुजारी ने पुनः पंच महाजन चौधरियों से कहा कि श्री ठाकुरजी के मन्दिर में कुछ आजीविका भी होनी चाहिये। उत्तर मे पंचों ने कहा कि हमारे कहे अनुसार कार्य करना होगा। पुजारी ने स्वीकार किया। तब पंचों ने निम्न प्रकार मन्दिर की व्यवस्था की।

१. श्री ठाकुरजी की तथा मन्दिर की सम्हाल पंचों के अधिकार में रहेगी।

२. श्री ठाकुरजी के आभूषण व सोने चांदी का अन्य सामान जो चढ़ावे में आवेगा वह ठाकुरजी की खालसे की बही में जमा होंगे।

३. अन्य चढ़ावा रूपया, पैसा, कपड़ा तथा नाज-पात आवेगा वह पुजारी लेगा।

४. रसोई के लिये सीधा और दीपक के लिये तेल सभी दुकानों और बस्ती के घरों से महिने में दो बार हर दशमी की दशमी पुजारी जाकर ले आवेगा।

५. रोली चन्दन के लिए लिखनी का पैसा बांध दिया गया।

६. ठाकुर जी की पोशाक नग ५ खास त्यौंहारों की बांध दी गई।

७. बारह महीनों में उत्सवों पर खर्चा लगे वह पंचायती की ओर से प्रति विवाह पोशाक एक बींद के हो जैसी–तथा रुपया १) रोकड़ी लाग का बांध दिया गया।

नबाब दोलत खां [दूसरा] ने जमीन बीघा १२५ शहर से उत्तरादी रोही में ठाकुरजी के चढ़ाई। मोचियों ने बेटी के विवाह की लाग का रुपया पांच तथा छींट का थान १ देने की कही।

गोरूजी भोजक के वंशजों द्वारा सरावगियों के मन्दिर, माण्डेला का भैरूजी और लक्ष्मीनाथ जी का मन्दिर इन तीनों मन्दिरों की पूजन ठीक समय समय पर न होते देखकर पंचों ने दो आदमी पण्डा जाति का भगवान की सेवा करो और प्रसाद पांवो के आधार पर रख लिया। कुछ दिनों के पश्चात उन दोनों पूजा करने वालों ने कहा कि हम दोनों तो श्री ठाकुर जी का प्रसाद पा लेते हैं, परन्तु हमारे बालकों के लिए भी कुछ होना चाहिए। पंच लोगों ने उनकी सेवा पूजा से प्रसन्न होकर इसकी भी निम्न प्रकार व्यवस्था कर दी।

पांती नग २ नेणों और गुलाबो पण्डा बेटां महादेव का जाति छापरवाल गांव रवासे वाले की रही और पांती नग १ गोरूजी भोजक के बंशजों की घर बैठे की रही। इस प्रकार पांती ३ बराबर करदी जो तीनों जने लेते रहो और ठाकुरजी की पूजा प्रेम पूर्वक बहुत अच्छी तरह करते रहो। वर्षों बाद आज भी पीढ़ी दर पीढ़ी यही क्रम चलता आ रहा है।

संचालन व्यवस्था को सुचारू रुप देने के लिये उस समय के प्रमुख व्यक्तिों द्वारा संवत् २०२१ में श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर कमेंटी के नाम से रजिस्टर्ड संस्था की स्थापना की। संस्था के नियम उपनियमों के अनुसार साधारण सभा के चुनाव द्वारा कमेटी का गठन होता एवं सम्पूर्ण जायदाद का रख रखाव उत्सव महोत्सव आदि की व्यवस्था, पुजारियों द्वारा पूजा व्यवस्था, किराया एवं खर्चों का लेन देन आदि सभी कार्य कमेटी की निगरानी में सम्पन्न होता।

समय में बदलाव आया। कमेटी के गठन की प्रक्रिया में कुछ स्वार्थी भावना कुछ राजनीति का हस्तक्षेप समाहित होता गया। सभी तथ्यों पर विचार कर पं. श्री देवकीनन्दन जी खेडवाल के प्रयत्नों से सर्वप्रथम मन्दिर संरक्षण के लिए सभी अधिकारों से युक्त एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट बोर्ड का गठन संवत् २०३२ में किया गया। ट्रस्ट बोर्ड के सर्व प्रथम सभापति पद पर श्री हनुमानप्रसाद जी नेवटिया रहे। उनके बाद श्री हनुमानप्रसाद जी धानुका ने सभापति पद का कार्य भार सम्भाला। आपके कार्यकाल में मन्दिर की सुचारू व्यवस्था एवं धार्मिक उत्सवों–महोत्सवों आदि पर विशेष ध्यान दिया गया। इससे इस मन्दिर की प्रतिष्ठा फतेहपुर एवं आस पास के क्षेत्र में सर्वोपरि हो गई। आपके ही कार्यकाल में ट्रस्ट बोर्ड ने अपने कुछ नियम उप नियमों के अन्तर्गत मन्दिर को क्षुद्र राजनीति से दूर करने हेतु मन्दिर कमेटी को भंग करके श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर प्रबन्ध समिति का गठन संवत् २०४४ आश्विन शुक्ला १० शुक्रवार (२-१०-८७) को किया गया। इस समीति का कार्यकाल दो साल निर्धारित किया गया। प्रबंध समिति के सचिव पद पर सर्वप्रथम श्री विष्णुप्रसाद खेड़वाल को नियुक्त किया।

स्वामित्व के सभी अधिकारों से युक्त उक्त रजिस्टर्ड ट्रस्ट के वर्तमान में सभापति पद पर युवा कार्यकर्त्ता समाजसेवी श्री श्यामसुन्दर जी धानुका हैं। आप में अपने पिता की भाँति कार्य की लगन, निष्ठा एवं सही निर्णायक क्षमता कूट कूट कर भरी है।

संवत् १९१८ ज्येष्ठ शुक्ला ११ में बना बालाजी मन्दिर संस्थान स्वामी दीनदास जी के शिष्य स्वामी सेवादास जी द्वारा श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर को चैत्र कृष्णा ५ मंगलवार संवत् २००२ को अर्पण किया गया। अर्पण के बाद इस संस्थान को विद्या मंदिर के उपयोग में लाया जाता रहा। समय के थपेड़ों को १३५ वर्ष तक सहन करता हुआ यह भवन जीर्ण-शीर्ण हो चुका था। वर्तमान मैनेजिंग ट्रस्टी श्री श्यामसुन्दर जी धानुका द्वारा अपने पिता स्व० हनुमानप्रसाद जी धानुका (पूर्व सभापति) की स्मृति में उसी स्थान पर नवीन भवन का निर्माण कराया जिसमें श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर के स्वामित्व में भारतीय शिक्षा समिति, जयपुर के अन्तर्गत सेठ हनुमानप्रसाद धानुका आदर्श विद्या मंदिर के नाम से इसी सत्र (जुलाई १९९६) से विद्यालय प्रारम्भ किया गया।

नगर में मुख्य डाक घर के पास श्रीमती नन्दकुंवर शिशोदिया के प्रयत्नों से श्री कृष्ण सत्संग भवन की स्थापना हुई। भगवान के सुन्दर स्वरूप का दर्शन, धार्मिक महिलाओं द्वारा प्रभु के संकीर्तन हेतु भवन इस संस्थान का अनवरत् उपयोग में आता रहा है।

सम्वत् २०४८ (१८-८-९१) में उपरोक्त संस्थान को इसकी सुचारु व्यवस्था के लिये श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर धर्मार्थ ट्रस्ट के अंतर्गत कर दिया गया। वर्तमान में संतों का प्रवचन, भागवत् कथा आदि उत्सव-महोत्सवों के आयोजन के साथ अपनी परम्परा का निर्वाह कर रहा है। श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर ट्रस्ट द्वारा सञ्चालित सदाव्रत भी अब इसी भवन में सञ्चालित हो रहा है।

भक्त भीखजन

भीखजन के पूर्वज ढांचोलिया जाति के गौड़ ब्राह्मण थे। बाद में प्रेतान्न लेने और खाने के कारण इनको पतित महा-ब्राह्मण तारग या आचारज कहा जाने लगा।

भीखजन के पिता का नाम देवीसहाय एवं गुरु का सन्तदास जी था। सन्तदास जी चमड़िया जाति अग्रवाल महाजन दादूजी के शिष्य तथा सुन्दरदास जी के गुरु भाई थे। सन्तदास जी एक अच्छे कवि थे। उन्होंने बाहर हजार छन्दों की रचना की थी। अत: बाहर हजारी कहलाते थे। इनके भीखजन, बालकराम और चतुर्दास आदि शिष्य थे। बालकराम के बनाये हुए

वेदान्त के कवित्त पाये जाते है। चतुर्दास ने सम्पूर्ण भागवत् की रचना हिन्दी के पद्यों दोहा चौपाई में की थी। इनका एकदष स्कन्ध पं० देवकीनन्दन जी खेडवाल निजी संग्रहालय में (हस्त लिखित रूप में) अब भी विद्यमान है।

इस प्रकार भीखजन भी एक अच्छे कवि, विद्वान गुणी और भगवत् भक्त थे। ये प्रतिदिन श्री लक्ष्मीनाथ जी के मन्दिर में दर्शन करने आते थे। नगर के तत्कालीन पंचों ने एक महाब्राह्मण तारग जाति के व्यक्ति को सब लोगों के साथ मन्दिर में आना उचित न समझा और भीखजन का मन्दिर में प्रवेश बन्द कर दिया। उपयुक्त पुराने पत्रों में लिखा है कि भीखजन ने तीन दिन निराहार रहकर भगवान् की स्तुति की। चोथे दिन श्रीलक्ष्मीनाथ जी को स्मरण हुआ। पुजारी ने पूजन करके ठाकुरजी के आगे भोग रखा। तब ठाकुर जी ने मुख फेर लिया। पुजारी ने यह बात पंचों से कही। पंच लोगों ने मन्दिर में इकट्ठा होकर भीखजन को बुलाया। भीखजन ने हाथ जोड़कर कातर भाव से भगवान की प्रार्थना की। जब भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी अपने भक्त भीखजन के सन्मुख हुए। पंच लोगों के इस घटना को देखकर मन्दिर में सभामण्ड के सामने एक खिड़की निकलवा दी। इस खिड़की से भीखजन प्रतिदिन भगवान के के दर्शन करने आते।

भीखजन की बनाई हुई "भीखबावनी" जो सवंत् १६८३ (सन्१६२६) पोष सूदी १५ को रचित बहुत ही प्रसिद्ध है। हिन्दी के विद्वानों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। राघवदास जी ने अपनी भक्त माल में व पुरोहित हरिनारायण ने सुन्दर ग्रन्थावली में इनको दादू सम्प्रदाय के साहित्य भण्डार का रत्न कहा है। यह ५४ छन्दों में है। इसका एक एक पद भक्ति और ज्ञान का भण्डार है।

मन्दिर का नवनिर्माण एवं क्रमिक विकास

इस मन्दिर का जीर्णोद्धार और नव निर्माण बराबर होता आ रहा है। संवत् १८०६ में इस मन्दिर को बड़े विशाल रूप में बनवाया गया। इसके आँगन में सफेद संगमरमर दिवालों में चार अध्याय गीता की संगमरमर पर और बाकी सफेद तथा चित्रों की टाईल जड़ी हुई है। छत के नीचे सुवर्ण की चित्र-कारी का काम बहुत सुन्दर किया गया। मन्दिर सिंहद्वार और चार अन्य प्रमुख दरवाजों के किवाड़ों की जोड़ियाँ चांदी की बनी हुई है जिसमें चौबीस अवतारों की मूर्तियाँ बहुत ही सुन्दर उभरी है। मन्दिर के नीचे बड़ी मात्रा में सफेद जमीन कई मकान और फतेहपुर के बाजार में एक कटला और १०० के लगभग दुकाने और चौबारे है। मुख्य मंदिर के दूसरे हिस्से में संवत् २०४२

में एक भव्य सभागृह का निर्माण करवाया गया। सभागृह में प्रवचन, सत्संग के अलावा झुलोत्सव में मनोरम झांकियों आदि से इस क्षेत्र को सुसज्जित किया जाता है। इसी में बने कुण्ड जिसमें मंदिर की छतों से बरसात का पानी इकठ्ठा होता है बारहों मास भगवान के स्नान पूजा में काम आता है।

पुरानी परिक्रमा के बगल में एवं पीछे की जगह पर बहुत ही चौड़ी एवं ग्रेनाइट मार्बल युक्त परिक्रमा संवत् २०५० में बनकर तैयार हुई। मन्दिर का सबसे प्राचीन भाग उस समय खुदाई में मिला। उस समय के मन्दिर के भुमितल का फर्श करीब-आठ फुट नीचे पाया गया। उसी तलघर पर भगवान विराजमान होंने की तिबारी आदि का अवलोकन करने पर एवं उसी समानानन्तर तल पर बने बाला जी मन्दिर के नीचे (दुकानों के नीचे) तल घर का निर्माण देखने पर इस बात की पुष्टि होती है कि भीखजन को दर्शन देने के लिए यही तीन द्वार बाहरी तरफ रखे हुये थे। जहाँ से खड़े होकर भगवान के दर्शन के किये जा सकते थे। वर्तमान तलघर दुकानों के नीचे आज भी देखे जा सकते हैं बाद में इसी नींव पर आज का भव्य मन्दिर संवत् १८०६ में (सन् १७४९) चुरू के श्री नाहरमलजी लोहिया परिवार द्वारा भगवान के चमत्कारी रूप से सहायता एवं रक्षा होने पर उनके द्वारा निर्माण कराया गया। प्राचीन मन्दिर की गुंबज आज भी इस भव्य भवन के नीचे देखी जा सकती है। समय के थपेड़ों से जीर्ण एवं आज के दो सौ संत्तालीस वर्ष पूर्व वाहरी अठ्ठालिका का ऊपरी हिस्सा पिछले दिनों आये तूफान से गिर जाने पर इस ऊपरी भाग का पुनः निर्माण मन्दिर की विशालता के अनुरूप किया जाना चालु है।

भगवान के दर्शन करने के लिए हजारों स्त्री पुरुष प्रतिदिन मन्दिर में आते है। पाँच सौ वर्षों से अधिक प्राचीन यह प्रतिमा अपने भक्तों की मनो-कामना सिद्ध करने वाली है।

पूजा पद्धति उत्सव एवं महोत्सव

श्री लक्ष्मीनाथजी के मन्दिर, फतेहपुर में प्रतिदिन और बारह महिनों में होने वाली पूजा और उत्सवों के नियम जो आरम्भ से चले आ रहे हैं।

१– प्रातः काल की आरती सूर्योदय के समय और सायंकाल की आरती सूर्यास्त के १ घण्टा बाद आरंभ होती है। प्रातः काल आरती के लगभग १/४ घण्टा और सायंकालीन आरती के १ घण्टा पहले भगवान का पट खुलता है। भादवा सुदी ७ से पूर्णिमा तक और पूरे कार्तिक मास में प्रातः कालीन

आरती सूर्योदय से १ घण्टा पहले होती है। मध्याह्न में प्रातः कालीन आरती के लगभग ७ घण्टा पश्चात् भोग की आरती और सायं काल आरती के लगभग ३.३० घण्टे पश्चात् शयन की आरती होकर भगवान का पट बन्द होता है।

२– भगवान की पूरी प्रतिमा को प्रातः काल पूरा-स्नान, पंचामृत-स्नान, फिर पुनः शुद्ध स्नान कराके प्रतिदिन पोशाक बदली जाती है। चन्दन, केशर, अत्तर, पुष्प-आभूषण, तुलसी पत्र, धूप, दीप व बाल भोग के पश्चात् आरती होती है।

नोट–पुजारी हर ऋतु में पूरा स्नान करके ही भगवान के विग्रह का स्पर्श कर सकता है अन्यथा नहीं। प्रतिदिन चारों आरतियों के समय चार बार तो पुजारी के लिए स्नान करना अनिवार्य ही है। यदि पांचवी या अधिक बार मूर्ति को स्पर्श करने की आवश्यकता हो तो पुनः स्नान करके ही मूर्ति का स्पर्श कर सकता है अन्यथा नहीं।

३– भगवान के सभामण्ड के आगे पुजारी और उनके परिवार के पुरुष जो यज्ञोपवीत लिये हो तथा धोती बांधे हों रह सकते हैं अन्य नहीं।

४– भगवान के सभामण्ड में प्रतिदित भोग मन्दिर के भीतर बना हुआ ही लगता है। मन्दिर के बाहर बना हुआ प्रसाद बिना पर्दे के ही लगता है।

५– चैत सुदी ९ को रामजन्मोत्सव प्रायः ११ बजे भोग लगाकर दर्शन बन्द हो जाते हैं। फिर पंचामृत से स्नान कराकर पञ्जीरी का भोग और जन्म की सफेद पोशाक का दर्शन व आरती मध्याह्न १२ बजे होती है। प्रसाद वितरण बन्दनवार बाँधकर नगारा शहनाई व भजनों की रेकार्ड बजाई जाती है। शाम को ४ बजे बधाई और भजन होता है तथा दूर्वा वितरण करके पोतड़ा उत्सव मनाया जाता है।

६. चैत्र सुदी १५ को चारों हनुमान प्रतिमाओं के सिंदूर व ध्वजा से पुजारियों द्वारा शृंगार किया जाता है।

७. वैशाख सुदी ३ को चणे की दाल व मिश्री का प्रसाद लगाया जाता है एवं अक्षय तृतीया मनाई जाती है।

८. वैशाख सुदी १५ को लक्ष्मीनाथ जी प्रतिमा की मंदिर में स्थापना व ज्येष्ठ बदी २ को फतेहपुर में प्रवेश हुआ था अतः इन ३ दिनों से ही ठाकुरजी सभामंड के बाहर आ जाते हैं जो ग्रीष्म ऋतु की समाप्ति तथा अच्छी वर्षा होने पर उसी दिन से भीतर प्रवेश करते हैं। इतने समय में शाम को प्रति-दिन जल में बिराजते हैं।

९. आषाढ़ सुदी १५ को भगवान पुनः बाहर हिण्डोले में आते हैं जो पूरे एक महिने तक बाहर रहते हैं। सावण सुदी १५ की रात्रि में भीतर जाते हैं।

१०. सावण सुदी ११ से १५ तक झूलोत्सव शृंगार करके झांकियां तथा सजावट के साथ मनाया जाता है। इन दिनों रात्रि आरती करीब १२ बजे होती है।

११. भादवा बदी ८ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाया जाता है। आरती रात्रि १२ बजे होती है। दूसरे दिन भजन रेकार्ड बजते है। बन्दनवार बाँधी जाती है। पंचामृत पंजीरी का प्रसाद वितरण होता है व सायं ४ बजे बधाई उत्सव मनाया जाता है। उसी उत्सव में आगामी पारायण बचाने वालों के नाम की (जिसका आसाढ़ सुदी २ से निवेदन आना जरूरी है) घोषणा प्रबन्ध समिति के निर्णयानुसार की जाती है। दूर्वा देकर सभा विसर्जित होती है।

१२. भादवा सुदी ७ को श्रीमद् भागवत कथा का आरम्भ १ बजे से होता है। मिश्रजी के घर से भागवत लाई जाती है। पूजन आरती होकर कथा का आरम्भ हो जाता है। पूर्णिमा के दिन समाप्ति पर चढ़ावा होकर शोभा यात्रा निकाली जाती है।

१३. आसोज सुदी १ से अखंड रामायण का प्रवचन व सत्संग आदि के कार्यक्रम होते है। मन्दिर से जुड़े श्रीकृष्ण सत्संग भवन में भी झूलोत्सव एवं भागवत कथा का आयोजन अलग से होता है।

१४. विजय दशमी से फाल्गुन सुदी १५ तक मंदिर में दीपक की बत्ती से आरती होती है व अन्य समय में केवल चन्दन तुलसी से आरती होती है।

१५. शरद पूर्णिमा को सायं खीर व मतीरों की सजावट के साथ भगवान का शृङ्गार करके भव्यता के साथ उत्सव मनाया जाता है।

१६. कार्तिक बदी १४ तथा अमावस्या को दीपमालिका महोत्सव शृंगार व झाँकियां बाहर सजावट करके मनाया जाता है। सायं भव्य शृङ्गार होता है। रात्रि की आरती १२ बजे के बाद तक होती है।

१७. कार्तिक सुदी ११ को देवोत्थान उत्सव भजन व जागरण करके मनाया जाता है।

१८. होलिकोत्सव पर धुलंडी के बाद सायं फूल डोर की झांकी गुलाल आदि लगाकर भगवान का उत्सव मनाया जाता हैं।

१९. सूर्य तथा चन्द्रग्रहण के आरम्भ से ३ घण्टे पहले भगवान के पट बन्द हो जाते हैं, शुद्ध होने पर पुनः आरती के दर्शन होते है।

२०. भगवान के चढा चन्दन व कुंकुम का शेष खटकड़ों के बाहर लगे पात्र में डाल दिया जाता है। भक्तगण उसी चन्दन-कुम्कुम को अपने प्रयोग में लाते हैं।

(उपलब्ध सूचि द्वारा) श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर में श्रीमद्भागवत कथा का निम्न संवत् में निम्न सज्जनों द्वारा आयोजन हुआ

क्र० सं०	नाम आयोजन कर्त्ता	विक्रम संवत्
१.	श्री रामप्रताप हरकचन्द महेश्वरी	१९६४
२.	श्री सूरजमल बाजोरिया	१९६५
३.	श्री गोरखराम रामप्रताप चमड़िया	१९६६
४.	श्री रामचन्द्र ईश्वरदास पौद्दार	१९६७
५.	श्री ठाकरसीदास सूरजमल देवड़ा	१९६८
६.	श्री रामदेव खाखोलिया	१९६९
७.	श्री रामदेव केजडीवाल	१९७०
८.	श्री घनश्यामदास श्रीधर फतेहचन्दका	१९७१
९.	श्री मघराज पुरोहित	१९७२
१०.	श्री मिरजामल गजानन्द नेवटिया	१९७३
११.	श्री प्रेमसुखदास मोतीलाल सराफ	१९७४
१२.	श्री बद्रीदास सुरेका	१९७५
१३.	श्री गोगराज ज्वालाप्रसाद भरतिया	१९७६
१४.	श्री मंगलचन्द बोयतराम केडिया	१९७७
१५.	श्री शिवभगवान गजानन्द धानुका	१९७८
१६.	श्री गोरखराम मोतीलाल केडिया	१९७९
१७.	श्री सुखराम माणकराम बजाज	१९८०
१८.	श्री शिवभगवान गजानन्द धानुका	१९८१
१९.	श्री लूणकरणदास कुञ्जलाल पोद्दार	१९८२
२०.	श्री भजनलाल जयदयाल कसेरा	१९८३
२१.	श्री रामचन्द्र शिवप्रसाद सांवलका	१९८४
२२.	श्री झुहारमल हरसुखमल सराफ	१९८५
२३.	श्री मितानन्द ज्वालाप्रसाद लोहिया	१९८६
२४.	श्री शिवभगवान गजानन्द लोहिया	१९८७
२५.	श्री झुहारमल गोरधनदास सराफ	१९८८
२६.	श्री भजनलाल लखुराम देवड़ा	१९८९
२७.	श्री शिवभगवान गंगाबिशन बियाणी	१९९०
२८.	श्री मिरजामल बालुराम खेमका	१९९१
२९.	श्री बिरदीचन्द श्रीलाल चमड़िया	१९९२
३०.	श्री चुन्नीलाल शिवचन्द बियाणी	१९९३

क्र० सं०	नाम आयोजन कर्त्ता	विक्रम संवत्
३१.	श्री भोलाराम केशरदेव सराफ	१९९४
३२.	श्री बन्शीधर स्योरामदास बजाज	१९९५
३३.	श्री बद्रीनारायण गनेड़ीवाल	१९९६
३४.	श्री मंगलचन्द नन्दलाल खेमका	१९९७
३५.	श्री रामप्रताप मटरुमल चमड़िया	१९९८
३६.	श्री गुलाबराम सीताराम कारूंड़िया	१९९९
३७.	श्री बालुराम जयदयाल सराफ	२०००
३८.	श्री जौहरीमल सोहनलाल दुगड़	२००१
३९.	श्री मिरजामल फूलचन्द मोदी	२००२
४०.	श्री रामधनदास मुरलीधर पोद्दार	२००३
४१.	श्री घनश्यामदास भूधरमल सिधानियां	२००४
४२.	श्री रामनिवास सत्यनारायण पोद्दार	२००५
४३.	श्री बालुराम जयदेव सराफ	२००६
४४.	श्री कालूराम पूर्णमल बूबना	२००७
४५.	श्री गोरखराम भैरामल केडिया	२००८
४६.	श्री माणकचन्द काशीप्रसाद खेमका	२००९
४७.	श्री श्रीलाल दुर्गादत्त रामचन्द्र सिधानियां	२०१०
४८.	श्री घनश्यामदास मन्नालाल रामेश्वर चौधरी	२०११
४९.	श्री बद्रीदास रामलाल सिधानियां	२०१२
५०.	श्री भगवानदेई (नागरमल पोद्दार की बेटी)	२०१३
५१.	श्री शिवराम रामरतन सराफ	२०१४
५२.	श्री ठाकरसीदास केशरदेव क्याल	२०१५
५३.	श्री बलदेवदास नन्दकिशोर बाजोरिया	२०१६
५४.	श्री घनराज झाबरमल सराफ	२०१७

क्र० सं०	नाम आयोजन कर्त्ता	विक्रम संवत्
५५.	श्री हरसुखराम श्रीनिवास सराफ	२०१८
५६.	श्री सागरमल शिवकुमार छकड़ा	२०१९
५७.	श्री केशरदेव बासुदेव लोहिया	२०२०
५८.	श्री सागरमल रामेश्वर पोद्दार	२०२१
५९.	श्री पूर्णमल प्रहलादराय सिधानियां	२०२२
६०.	श्री केदारमल रामनिवास धेलिया	२०२३
६१.	श्री ओंकारमल हनुमानबक्ष सराफ	२०२४
६२.	श्री सांवलराम सत्यनारायण गोयनका	२०२५
६३.	श्री मनसाराम रामगोपाल ढ़ांढ़णियां	२०२६
६४.	श्री बैजनाथ दोलतराम सराफ	२०२७
६५.	श्री रामकुमार पुरुषोत्तमलाल सिधानियां	२०२८
६६.	श्री दुर्गादत्त हरीराम कसेरा	२०२९
६७.	श्री कालुराम बालुराम पोद्दार	२०३०
६८.	श्री हरदयाल रामबल्लभ नेवटिया	२०३१
६९.	श्री केशरदेव बनवारीलाल क्याल	२०३२
७०.	श्री नटवरलाल चौधरी	२०३३
७१.	श्री हुक्मीचन्द देवकीनन्दन खेडवाल	२०३४
७२.	श्री श्यामलाल श्रीलाल नेवटिया	२०३५
७३.	श्री शिवप्रसाद हीरालाल क्याल	२०३६
७४.	श्री रामेश्वरलाल मदनलाल मोदी	२०३७
७५.	श्री बजरंगलाल मदनलाल पोद्दार	२०३८
७६.	श्री किरणकुमारी धर्मपत्नी रतनलाल दुगड़	२०३९
७७.	श्री वासुदेव लक्ष्मीनारायण सराफ	२०४०

७८.	श्री गजानन्द बाबूलाल धानुका	२०४१
७९.	श्री प्रेमचन्द त्रिलोकचन्द बोहरा	२०४२
८०.	श्री मुरलीधर दुर्गादत्त धेलिया	२०४३
८१.	श्री शुभकरण श्यामसुन्दर सराफ	२०४४
८२.	श्री मोहनलाल पुत्र नथमल, रामोतार, दामोदर रुंथला	२०४५
८३.	श्री नरसिंहदास गोरधनदास पोद्दार	२०४६
८४.	श्री श्यामसुन्दर दिनेशकुमार नांगलिया	२०४७
८५.	श्री रामबल्लभ काशीप्रसाद धानुका	२०४८
८६.	श्री श्योप्रसाद झाबरमल क्याल	२०४९
८७.	श्री शिवदत्तराम सांवलराम गोयनका	२०५०
८८.	श्री अर्जुनदास विश्वनाथ रामावतार पोद्दार	२०५१
८९.	श्री बृजमोहन प्रहलादराय ढ़ांढ़णिया	२०५२
९०.	श्री प्रहलादराय राधाकृष्ण चिरानिया	२०५३

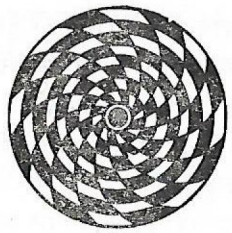

अलौकिक प्रत्यक्ष चमत्कारित अनुभव

— श्री रामस्वरूप बियाला

आज के भौतिक युग में वैज्ञानिक स्तर पर स्वयं सिद्ध सिद्धान्तों व तर्कों पर आधारित अनुभूतियों को ही मान्यता प्राप्त हो सकती है परन्तु प्रत्यक्षम् किम् प्रमाणम् को झुटलाया भी तो नहीं जा सकता-भले ही वह बुद्धि के परे या मन के विश्वास को शीघ्र पचाने योग्य हो या न हो।

इसी प्रकार की भावनाओं को उद्वेलित करने वाली कुछ तथ्यपूर्ण घटनाओं का विवरण यहां प्रस्तुत है जिसे पढकर भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी महाराज के प्रति असीम श्रद्धा और भक्ति का उद्वेक होना स्वाभाविक है।

(१) आज से प्राय: ३७० वर्ष पूर्व (सन् १६२६) में महा ब्राह्मण आचरज भीखजन को नित्य दर्शन मिले इसके लिए भोग से मुख मोड़ पंच महाजनों को विवश कर उस भक्त का मन्दिर में प्रवेश बन्द कर देने पर भी उस भक्त को एक खिड़की के द्वारा दूर से दर्शन का लाभ दिलवाने की घटना को तो बार बार पुस्तक बद्ध किया जा चुका है।

(२) बीच समुद्र में डूबते जहाज के मालिक द्वारा अन्य कोई आसरा न रहने पर श्री लक्ष्मीनाथजी महाराज की गुहार भक्ति पूर्वक की गई जिसके परिणाम स्वरूप डूबता जहाज किनारे पर सकुशल पहुंचा, जान माल की बिना किसी हानि के जिसके फलस्वरूप मन्दिर भवन के उत्तरी भाग के चौबारों का निर्माण भक्त की अपनी श्रद्धा का प्रतीक आज भी शोभायमान है।

(३) अनेक नगरों में सेंध मारकर चोरियों का आदी दल जब फतेहपुर में अत्यन्त अमूल्य आभूषणों व सम्पत्ति को उड़ा लेने का लोभ संवरण न कर सका तो श्री मन्दिर की परिक्रमा व सीढियों में छिप तो गया पर जब अपना मनोरथ पूरा करने को प्रयत्नशील हुआ तो पाया कि आंखों की रोशनी समाप्त हो गई है-बहुत सिर मारा निकल भागने

हेतु पर मार्ग नहीं सूझा व आंखे भी गई अत: स्वत: समर्पण कर भूल स्वीकार की व क्षमा मांगी।

(४) भोग की भूल से त्रस्त भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी महाराज सामने मिठाई की दुकान पर अपने कड़े गिरवी रख कर प्रसाद तो पा गये परन्तु पुजारी को कड़े की चोरी में पकड़वाने की व्यवस्था करवी-भला हो मिठाई वाले का जो इस अपूर्व सौभाग्य का वर्णन कर पुजारी को तो बच गया पर यह किसी की समझ में नहीं आया कि सभा मण्डप में तालों के भीतर व इतने दरवाजों को खोलकर प्रभु बाहर कैसे पहुंचे।

(५) जन्माष्टमी के पर्व पर मन्दिर के पट खुलने में अतिशय विलम्ब होते देख कर श्रद्धालु दर्शनार्थियों का जब धैर्य विचलित होने लगा तो व्यवस्थापक द्वारा पुजारियों से जानकारी ली गई तो मालूम हुआ कि एक घंटे से प्रयत्न करने पर भी मूर्ति पोशाक धारण नही कर रही है अत: कारण का निदान हुआ व पुजारियों को याद दिलाया गया कि आज तो सादी पौशाक ही धारण करेंगे। बस फिर क्या था मिनटों में पोशाक ग्रहण व भक्तों का संयम समाप्त हो दर्शन लाभ मिला।

(६) नगर के प्रमुख पंडित ज्योतिषी पैर के भयानक फोड़े से पीड़ित हुये-डाक्टरों ने घाव की बढती स्थिति को देखा समझा व निर्णय किया कि आपरेशन करवा के या टांग का वह भाग काटने के अलावा कोई उपाय नहीं है। दुखी पंडितजी निराश मन से भगवान के बाहरी गवाक्ष पर बैठे चिंतित हो रहे थे व प्रार्थना कर रहे थे कि प्रभु आप ही संकट टाल सकते हैं और तुरन्त एक बाबा साधु ने आकर कष्ट पूछा झोली से कुछ भस्म खाने लगाने को दी व अदृश्य हो गये परन्तु पंडितजी को पूरा लाभ हुआ-टांग बच गई-डाक्टरो को आश्चर्य हुआ यह कैसे संभव हुआ पर हुआ यह एक तथ्य है।

(७) निर्माण कार्य श्री मन्दिर के विकासार्थ जब भी हाथ में लिया गया चाहे वह प्रांगण का विस्तार हो-कटला बनवाना हो पुजारी गृह अथवा सभागार के कार्यों का प्रारम्भ हो अर्थाभाव सामने रहता था किन्तु जब हाथ में लिया जाता था दृढ़ निश्चय और अटूट आस्था के साथ तो स्वत: सभी बाधायें हट जाती थी धन की कमी नहीं रहती थी और कार्य सम्पन्न हो जाता था यह एक अनोखा अनुभव था कि

बाजार से दीपक जलाने हेतु तेल माँग मांग कर काम चलाने वाले भगवान की कैसी अद्भुत लीला है कि लोग आगे आ आकर प्रत्येक आवश्यकता की तन मन धन से पूर्ति करते थे जैसे प्रेरणा ईश्वरीय हो ।

(८) शिवालय में भगवान शिव की आरती शंख द्वारा किया जाना शास्त्रोक्त संभावित नहीं है अतः पं० श्री देवकीनन्दन जी खेड़वाल ने पुजारी से निवेदन किया व पुजारी ने उनकी बात मानकर पूजा शंख व शंखजल से नहीं की किन्तु उसी रात पंडितजी को स्वप्न हुआ व सभी एकादश रुद्र प्रभुओं को श्री लक्ष्मीनाथ जी के चारों ओर वृताकार विराजमान देखा व आभास हुआ कि हरि-हर सब एकाकार है इसे मन्दिर में तो सर्वत्र श्री लक्ष्मीनाथ जी ही विराजमान है अतः पंडितजी ने अपना स्वप्न पुजारी को बताकर पुनः पूर्व स्थिति ही चालू रखने का आग्रह किया ।

(९) मुख्य बाजार का आवागमन व सभी आमने सामने की दुकानों पर सैकड़ों व्यक्तियों की दिन रात उपस्थिति के बावजूद अट्टालिकाओं चौबारों पर मरम्मत या निर्माण कार्य अनेक बार होते है पर कभी किसी को जरासी खरोंच भी नहीं आई व अभी अभी सबसे ऊपर की बारहदरी व मुख्य द्वार के ऊपर का एक भाग मध्याह्न समय अचानक भारी वर्षा व अंधड़ तूफान से नीचे अचानक टूट कर गिरा पर किसी प्रकार की हानि जन-धन व अन्य प्रकार की न होना श्री लक्ष्मीनाथ जी महाराज का कृपा प्रसाद ही कहा जा सकता है ।

संक्षिप्त तिथि तालिका परिचय (उद्भव से वर्तमान तक)

संवत् १५२९–२०५३

१. जमीन से उद्भव संवत् १५२९ (सन् १४७२) पूर्व वर्ष ५२
(एलोर ग्राम श्री मुहम्मद अली पठान के यहां)

२. फतेहपुर में प्रादुर्भाव (५९ वर्ष बाद) संवत् १५८८ ,, ४६
(सन् १५३१) (सब्जी मंडी के पास स्थित
श्री सीताराम मन्दिर की कुटिया में)

३. वर्तमान मन्दिर में संस्थापन (३३ वर्ष बाद) ,, ४३
संवत् १६२१ (सन् १५६४)
(नवनिर्मित मन्दिर में प्रतिष्ठापन)

४. भक्त भीखजन को दर्शन (६२ वर्ष बाद) ,, ३७०
संवत् १६८३ (सन् १६२६)
(भीखजन को प्रत्यक्ष दर्शन)

५. मन्दिर जीर्णोद्धार (विशाल प्रांगण) ,, २४७
(१२३ वर्ष बाद) संवत् १८०६ (सन् १७४९)
(वर्तमान मन्दिर का विशाल भवन निर्माण)

६. वर्तमान स्वरूप (२४८ वर्ष बाद) संवत् २०५३ ,, —
(सन् १९९६) (सभागृह कटला पुजारी कक्ष
बड़ी परिक्रमा के साथ परिसर)

6. १९९६ – २०१० - रजत श्रृंगार

प्रतिदिन आरती समय सारिणी

(स्टेण्डर्ड समय)

दिनांक→	१ से १०		११ से २०		२१ से ३१	
समय → महीना ↓	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम
जनवरी	७.२५	६.४५	७.२५	६.५०	७.२५	७.००
फरवरी	७.२०	७.१०	७.१५	७.१५	७.०५	७.२५
मार्च	६.५५	७.३०	६.४५	७.३५	६.३५	७.४०
अप्रैल	६.२५	७.४५	६.१०	७.५०	६.००	७.५५
मई	५.५०	८.००	५.४५	८.१०	५.४०	८.१५
जून	५.४०	८.२०	५.४०	८.२०	५.४०	८.२५
जुलाई	५.४५	८.२५	५.५०	८.२५	५.५५	८.२०
अगस्त	६.००	८.१५	६.०५	८.०५	६.१०	७.५५
सितम्बर	६.१५	७.४५	६.२०	७.३०	६.२५	७.२०
अक्टूबर	६.३०	७.१०	६.३५	७.००	६.४०	६.५०
नवम्बर	६.४५	६.४०	६.५५	६.३५	७.००	६.३०
दिसम्बर	७.१०	६.३०	७.१५	६.३५	७.२५	६.४०

विशेष—१. भाद्रपद शुक्ल ७ से १५ तक एवं सम्पूर्ण कार्तिक मास में प्रातः की आरती समय से एक घंटा पहले होती है।

२. सायंकाल की आरती के लगभग तीन घंटा पश्चात् शयन की आरती होकर भगवान के पट्ट बन्द होते हैं।

द्वितीय खण्ड

★

श्री लक्ष्मीनाथजी महाराज का मन्दिर

भक्त भीखजन रचित भीख बावनी एवं भोग - पोढना - बधाई व स्तुतिगान

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रातःकाल से रात्रि तक प्रतिदिन के भोग, आरती, स्तुति और पोढ़ना

—भोग प्रातःकाल का—

छगन मगन आछे लाल कीजिये कलेवा ।
षट्रस पकवान ल्याई थाल भरे मेवा ।
भोर भई भूख लागी पायलो सुख देवा ॥
युगल प्रीती खोल फेट बान्ध ल्यो न मेवा ।
गऊवन से डिगर जात ग्वालन से करत बात ॥
कौन बान परियो नाथ श्री लक्ष्मीनाथ सेवा ।
सूरदास मदन मोहन घरे क्यों न खेलो लाल ।
भूंरा चक डोर भोर हंस ज्यो परेवा ॥ छगन मगन० ॥
गंगा जल निर्मल नीर झारी भर ल्याई ।
मात खड़ी द्वारे ठाड़ी लीजिए मुरारी ॥ छगन मगन० ॥
हाजर हथ पान बीड़ो दाता रस ल्याई ।
शोभा थारी देख देख आनन्द हो ज्याई ॥ छगन मगन० ॥